-ः प्रथम अध्यायः-

-: प्रथम अध्याय :-

रजनी पनिकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व -

महत्व -

1] जीवन परिचय : वंश -

2] बाल्यकाल और शिक्षा -

3] पारिवारीक जीवन -

4] व्यक्तित्व -

5] कृतित्व -

निष्कर्ष -

x-x-x-x-x-x
x-x-x-x
x-x
x

प्रथम अध्याय

"रजनी पनिकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।"

महत्व:-

किसी लेखक के कृतित्व की मूलभूत चेतना, प्रयोजन, लक्ष्य या उसमें समाहित सम्पूर्ण सत्य को बिना लेखक के व्यक्तित्व का अनुशीलन किए हम पूर्णतः ज्ञात नहीं कर सकते क्योंकि "मूल सृजन प्रेरणा में कवि का व्यक्तित्व सबलतम उपकरण तत्व नहीं है, वरन् उसके स्वरूप निर्माण का विधायक केन्द्र बिन्दु भी है।"[१]

लेखक का कृतित्व उनके जीवन-दर्शन का प्रतिबिम्ब होता है। जीवन दर्शन और व्यक्तित्व तीनों का पारस्पारिक संबंध होता है। इसी के आधारपर ही लेखक के कृतित्व की सही पहचान की जा सकती है।

१] डॉ. शोभानाथ यादव: कवयित्रि महादेवी वर्मा : पृ. १९.

जीवन परिचय : वंश -

रजनी जी का जन्म पंजाब [अब पाकिस्तान] के एक जमींदार घराने में ११ सितम्बर सन् १९२४ में हुआ। रजनी जी का परिवार देश विभाजन के पहले पंजाब में गुजरात नामक जिले के "कुजाह" में था। उनके पितामह का नाम "रायबहादुर दीवान दिलबाग नैयर" था। ये लोक जाति से क्षत्रिय [खत्री] थे। इसी कारण दिलबाग नैयर परिवार में परंपरागत इमानदारी, साहस और निर्भीकता विद्यमान थीं। वे अंग्रेजी के प्रशासनिक सेवा विभाग में डिप्टी कमिश्नर थे। उन्होंने बहुत से पुनित कर्म किए थे, जिन में सर्व-श्रेष्ठ था "शाहखेज" डाकू का वध। इसी वध के कारण अंग्रेज सरकारने दिलबाग नैयर को "रायबहादुर" की उपाधि और इनाम में "बीस मुरब्बे" की जागीर दी गई थी।

दिलबाग नैयर के द्वितिय पुत्र दीवान महेसदास रहे हैं। दीवान महेसदास भी पिता जी के बाद कमिश्नर पद तक पहुँचे। उनके चार बेटे हुये किन्तु बेटी एक भी न थी। दीवान महेशदास जी ने अपने बडे पुत्र दीवान बरकतराय की बेटी वीधिवत् गोद लेकर कन्या का अभाव पूर्ण किया। हिन्दु परिवार में कन्यादान किए बिना मुक्ति नहीं मिलती। ऐसी श्रद्धा है। इस प्रकार दीवान महेसदास जी के चार पुत्र और एक पुत्री हुए। उनके नाम क्रमशः इस प्रकार है - पुत्र दीवान बरकतराय नैयर, प्रो. लाजपतराय नैयर, हरबंसराय नैयर, प्राणनाथ नैयर और बेटी रजनी। दीवान महेसदास का निधन ११ जनवरी सन्. १९५५ में हुआ।

रजनी जी के जन्मदाता तथा बडे भाई दीवान बरकतराय नैयर भी सरकारी प्रशासनिक सेवा में थे। उनकी पत्नी तथा रजनी की जन्मदात्री का नाम कृष्णवंती था। उसने छः कन्याओं और एक पुत्र को जन्म दिया था। क्रम से इनके नाम हैं ------ स्वर्गीय श्रीमती रजनी पनिकर, श्रीमती सुदर्शन टण्डन, श्रीमती कान्ता सिन्हा, स्वर्गीय श्रीमती संतोष खन्ना, श्रीमती प्रेमलता खन्ना, पुत्र श्री हेमन्त नैयर और श्रीमती वीणा टण्डन। रजनी की बडी भाभी तथा जन्मदात्री का निधन अक्टूबर सन्. १९६५ में हुआ और पिता तथा बडे भाई दीवान बरकतराय नैयर का निधन ११ सितम्बर सन्. १९६८ में हुआ।

उनके द्वितीय भाई श्री लाजपतराय नैयर प्रोफेसर रहें है और उन्होंने इतिहास की कई पुस्तके लिखी हैं। वे भारतीय सरकार के प्रमुख सूचना अधिकारी रहें हैं। उनकी पत्नी का नाम विमला देवी था। इनके तीन पुत्र हैं, दो विदेश में और एक स्वदेश में है। तृतीय भाई श्री हरबंसराय नैयर सरकारी न्याय सेवा में थे, तो शान्ति भाभी गृह विज्ञान पढ़ाने के लिए विदेश जानेवाली प्रथम पंजाबी महिला हैं। वह पंजाब सरकार के शिक्षा विभाग में बहुत बड़ी अधिकारी रह चुकी। इनके तीन पुत्रियाँ और एक पुत्र हैं। दोन पुत्रियाँ और एक पुत्र अमरिका में है और एक पुत्री यहाँ हैं। वह भी आई.ए.एस. होकर भारतीय प्रशासनिक सेवा में काम कर रही हैं।

रजनी जी के चतुर्थ भाई प्राणनाथ नैयर और भाभी कुसुम हैं। इनके एक पुत्र और एक पुत्री हैं। प्राणनाथ नैयर भारतीय नौसेना में कप्तान थे, तो उनकी पत्नी अमरिका में कौन्सिल विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग की अध्यक्षा थी। रजनी जी की तृतीय बहन श्रीमती कान्ता सिन्हा अभी जीवित हैं। वह भी एक आदर्श कथाकार तथा उच्च कोटि की लेखिका हैं। उन्होंने कई उपन्यास और कहानियाँ लिखी हैं।

इस तर के अमीर, साहसी, निर्भिक, उदार और सुसभ्य परिवार का साया रजनी को मिला। इसी कारण उनके विचारों के साथ-साथ उनकी लेखनी में भी निर्भिकता, सरलता और सरसता आ भरी। रजनी जी की दादी-माँ [भगवन्ती] बडी उदार और स्नेहमयी नारी थी। वह जादा पढ़ि-लिखी नहीं थी। लेकिन उसके पास जीवन का विशाल अनुभव था। दुनिया को उसने नजदीक से देखा और परखा था। रजनी जी का शैशवकाल इसी दादी-माँ के सहवास में बिताया। इतनाही क्या लेखिका को बी. ए. तक अपनी माता कौन है इसका भी पता नहीं था। रजनी जी ने दादी-माँ से बहुत सीखा और पाया। दादी-माँ बाह्याडम्बर, मिथ्याचार, अंधश्रध्दाओं का सक्त विरोध करती थी। ये गुण रजनी जी को अपनी दादी-माँ से विरासत के रूप में मिले थे। दादी-माँ के सहवासने जाने-अनजाने उसके जीवन-पथ को प्रशस्त किया था। रजनी के दादी-माँ ने अपना पार्थिव देह अक्तूबर सन्. १९९२ में छोड दिया।

बाल्यकाल और शिक्षा --

रजनी का बचपन बडे ही लाड-प्यार में बिता। चार भाईयों में अकेली रजनी ही एक बहन थी। इसी कारण रजनीजजी का नाम भी राजदुलारी रखा गया था। लेकिन घरवाले उसे प्यार से मुन्नी नाम से पुकारते थे। रजनी जी बड़ी खुशकिस्मत नारी थी। उसने अपना बाल्यकाल दादी-माँ के साये में हँसी-खुशी से बिताया। वहीं पर उसने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी की। अपने द्वितीय भाई प्रो. लाजपतराय की निगरानी में उसने अपनी उच्च-शिक्षा पूरी की। भगवान ने अपने हाथों उसे सौंदर्य-मंडित किया था, लेकिन रजनी जी ने अथक परिश्रम से अपने सुचारी व्यक्तित्व को विद्याभूषित किया। रजनी जी के द्वितीय भाई प्रो. लाजपतराय नैयर भी एक आदर्श लेखक थे। उन्होंने इतिहास में कई पुस्तके लिखी हैं। और रजनी जी के पितामह भी फारसी में कविता करते थे।

बाल्यकाल में प्राप्त सुसंस्कारों की पूँजी के बलपर ही रजनी जी एक लब्धप्रतिष्ठित लेखिका बनी। उसने जो कुछ भी लिखा, नाम कमाने के लिए नहीं लिखा। क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित लेखिका के मन-मानस विचारों का तूफान था। वही उसने अपनी धारावाही कलम द्वारा दुनिया के सम्मुख प्रस्तुत किया। रजनी जी के विचारोंने पाठकों को झकझोर दिया। सदियों से शोषित-उपेक्षित नारी के चरित्र का उन्नयन किया। पद-दलित नारी को पुन: आदर स्थान प्राप्त करा देने का सबल सायास किया। और वहीं रजनी जी आगे चलकर एक आदर्श कथाकार के रूप में हमारे सामने आ ड गई।

रजनी जी अपने द्वितीय भाई प्रो. लाजपतराय नैयर के पास ही लाहौर में रहती थी। वहींपर उनकी दादी-माँ भी रहा करती थी। तो सहजतासे रजनी की इण्टर और बी. ए. की शिक्षा लाहौर के "फतेहचन्द कालिज" में हुओ। उस समय "कुमारी कंचनलता सब्बरवाल" फतेहचन्द कालिज की प्रिन्सीपल

थी। रजनी जी उस कालिज में छात्र युनियन की अध्यक्षा भी रही है। वे दिन स्वतंत्रता संग्राम के थे। सन्. १९४२ में केवल "भारत माता की जय", "अंग्रेजो भारत छोडो" जैसे नारे पग-पग पर सुनाई देते थे। रजनी जी भी उस स्वतंत्रता संग्राम में युवतियों के साथ लाहौर की सडकों पर तिरंगा हाथ में लेकर अजादी के नारे लगाती थी। और युवतियों के जुलूस का मार्ग निर्देशन भी सफलतापूर्वक कर चूकी थी।

"पाकिस्तान बनने से पहले मार्च १९४७ में लाहौर में जब सब कालिजों की ओर से जुलूस निकला, तो वे कांग्रेसी ध्वज हाथ में लेकर सबसे अगली पँक्ति में थी। उस समय गोलबाग में पुलिस हजारों की संख्या में थी और बार-बार गोली चलाने की धमकी दे रही थी। किन्तु रजनी जी ने कदम पीछे नहीं हटायें, और निडरतासे वह स्वतंत्रता की पुजारिन आगे ही बढ़ती गयी। उनकी यह बात इनके दादी-माँ को पसन्द न थी।"[१]

रजनी जी ने एम्. ए. की शिक्षा अंग्रेजी विषय को लेकर सन्. १९४६ में "सनातन धर्म कालिज, लाहौर" में पूरी की। रजनी जी अहिन्दी भाषी थी। लेकिन अपने लेखन कार्य में कुछ त्रुटियाँ एवं कमजोरियाँ न रहें, इसलिए उन्होंने सन्. १९५३ में हिन्दी विषय को लेकर एम्. ए. पास किया। श्री विष्णू प्रभाकर ने रजनी स्मृति अंक में लिखा है — "उनकी एक प्रारंभिक रचना की मैंने तीखी आलोचना की थी, विशेषकर भाषा को लेकर।"[२] इसमें उपर्युक्त विचार की पुष्टि होती है।

रजनी जी की मीराबाई के साहित्यपर संशोधन करने की तीव्र इच्छा थी। लेकिन अल्प आयु के कारण वह अधूरी रही। रजनी जी एक आदर्श लेखिका होने के साथ-साथ वह एक कुशल पत्रकार और आदर्श भविष्य द्रष्टा भी थी।

१] कमला नैयर : लेखिका-रजनी स्मृति अंक : पृ. : १५.

२] विष्णू प्रभाकर : लेखिका रजनी स्मृति अंक : पृ. : १.

वह अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी, और बंगाली भाषा अच्छी तरह पढ़, लिख और बोल सकती थी। और मलयालम भी वह कुछ मात्रा में जानती थी। रजनी जी नौकरी के साथ-साथ अनेक भाषा जाननेवाली और कुशल लेखनकार्य करनेवाली एक आदर्श भारतीय नारी हैं।

सच-मुच रजनी जी के पास एक संवेदनशील मन था। बाह्य-परिस्थितियों ने उसे झकझोर दिया, और रजनी जी लिखती रही। एक साधारण महिला ने अपनी दिव्य लेखनी द्वारा असाधारण काम करके दिखाया।

पारिवारीक जीवन :-

रजनी जी का परिवार बहुत बड़ा रहा है, लेकिन अपनी-अपनी सुविधाओं के कारण बिखरा हुआ दिखाई देता है। त्यौहार के समय सारा परिवार लाहौर में एकत्रित होता था। उनके द्वितीय भाई और दादी-माँ वहीं रहते थे। रजनी भी उनके पास ही रहती थी। स्वतंत्रता विभाजन के उपरान्त परिवार शिमला में एक वर्ष तक रहा, फिर जलंधर में उनके माँ-पिता आकर रहने लगे, रजनी उस समय अपने माँ-पिता के साथ रहा करती थी। वहीं पर ११ अप्रैल सन्. १९४९ मे केरल के निवासी स्थल सेना के कप्तान [अब रिटायर्ड कर्नल] श्रीधर पनिकर के साथ रजनी जी का विवाह हुआ। पति केंद्रीय सरकार में थे। इसी कारण रजनी जी ने अपना घर दिल्ली में बसाया। वहाँ उन्होंने १९५० में आकाशवाणी के निदेशक के उच्च पदपर नौकरी करना शुरू किया। उन्होंने दिल्ली, लखनऊ और कलकत्ता के आकाशवाणी केंद्र में बडी कुशलता से निर्देशक का काम किया।

"भागवन्ती" दादी-माँ की लाडली मुन्नी रजनी जी सच-मुच भाग्यवती थी। श्रीधर जैसे सुशिक्षित और समझदार पति को पाकर रजनी जी धन्य हो गई थी। पति-पत्नी में किसी प्रकार की अनबन न थी। रजनी जी का परिवार विवाहोपरान्त केवल पति-पत्नी का ही था, क्यों कि ससुरालवाले केरल में रहते थे। कभी-कभी पति के स्थानान्तरित होने के कारण अकेली रही।

रजनी जी बड़ी साहसी और निर्भीक महिला थी। दिल्ली तथा कलकत्ता की भीड भरी सडकोंपर वह बडे विश्वास के साथ गाडी चलाती थी। वह एक साहसी, स्नेहमयी और उदार महिला थी।

रजनी जी का जीवन इतना हँसी-खुशी का था, फिर भी उनके मन में एक खंत उसे सताती रही। विवाह के पश्चात नौ वर्षोतक रजनी जी की गोद खाली ही रही। संवेदनशील रजनी इससे अन्यमनस्क रही। उसके खिलते जीवनपर यह घटना मानो-वज्रपात जैसी थी। लेकिन आखिर भगवान ने उसकी सुन ली। रजनी जी की खाली गोद भरी। उसके आँगन में खुशी की फुहारे झडने लगी। रजनी जी को एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। पुत्र को पाकर रजनी जी के अपूर्ण जीवन को पूर्णता प्राप्त हो गई। उसने पुत्र का नाम "ऋत्विक" रखा है, जो संस्कृत भाषा से उन्होंने ले लिया है। उनकी इच्छा थी कि अपना बेटा पुरोहितों के आचरणा का पालन करें। इसलिए उन्होंने उनका नाम ही "ऋत्विक" रखा होगा। रजनी जी उन्हें प्यार से बिट्टू नाम से पुकारती थी। उनकी इच्छा थी कि अपना बेटा डॉक्टर बने। ऋत्विक जी ने अपनी माँ की तमन्न पुरी की। लेकिन जब ऋत्विक पंद्रह-सोलह के थे तभी रजनी जी परलोक सिधारी। बेटे का उज्वल-भविष्य देखना उनके भाग्य में नहीं था। जो ऋतिवक जी अभी अमरीका में डॉक्टर है। और वहींपर उन्होंने अपना घर बसाया हैं। उसने शादी भी की है, और उनकी पत्नी लेखक "गिरजाकुमार माथुर" के साली की बेटी है। उनकी पत्नी का नाम है संगीता। वह दोनों पति-पत्नी अभी अमरीकामें है। और रजनी के पति तथा ऋत्विक के पिता अभि जीवित है, वे दिल्ली मैं ही रहते है।

रजनी जी विदुषी महिला, लब्धप्रतिष्ठित लेखिका होने के साथ-साथ आदर्श गृहीणी भी रहीं। अच्छा खाना बनाना और पति तथा बेटे को खिलाना उन्हें बहुत प्रिय था। उन्हें बढ़िया भोजन बनाना और फिर मित्रों को खिलाना बहुत प्रिय था। उसे बिट्टू से बहुत लगाव था। बिट्टू के लिये उन्होंने रात को

आया रखी थी। लेकिन वह स्वयं उनको देख-रेख करती थी। उनके इच्छा के विरुद्द कोई कभी काम नही करती। रजनी जी एक बहुत स्नेहमयी नारी थी।

कुलमिलाकर रजनी जी का पारिवारीक जीवन स्वस्थ एवं सम्पन्न था। परंतु अंतिम दिनों रजनी जी के सुखी जीवन को किसीकी नजर लग गयी। उन्होंने बडे चावसे दिल्ली मैं मकान बनवाया। लेकिन उस घर में रहने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त नहीं हुआ। केवल गृह प्रवेश का हवन भर किया। फिर अकाल मैं केवल पचास वर्ष की आवस्था में ८ नवम्बर १९७४ के दोपहर ढाई बजे हृदयगति बंद होजाने के कारण रजनी जी की जीवन लीला समाप्त हो गई।

व्यक्तित्व :-

किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व का गहरा संबंध होता है। वस्तुत: कृतित्व साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब होता है। रजनी जी का कृतित्व भी उनके व्यक्तित्व के अनुरूप ही है। उनके कृतित्व के मूल उद्देश्य को जानने के लिए उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का आकलन होना नितांत अनिवार्य है।

रजनी जी का व्यक्तित्व सादा किन्तु प्रभावशाली, विद्रोही किन्तु आस्थावान, मधुर परंतु ओजस्वी, गंभीर परंतु गतिमय, हंसमुख किन्तु गरिमामय था। उँचा भरा-पुरा डील-डौल, गमकता हुआ कुंदनी रंग, घुघराले केश, तेजस्वी आँखे, मंद-मधुर मुस्कार, आकर्षक किन्तु सभ्य वेषभूषा देखनेवाले की दृष्टि को स्थिर कर देती थी। उस तेजस्वी व्यक्तित्व से हरकोई अभिभूत हो जाता था।
रजनी जी के व्यक्तित्व के बारे में कुन्था जैन के शब्द सार्थ महसूस होते हैं ------ "रजनी की व्यक्तित्व अनेक आयामों में विकसित और निखरा हुआ था। बहुमुखी व्यक्तित्व की यह नारी, एक संपूर्ण नारी के अति निकट पहुँचती है। नारी के लिए वंछित कोई ऐसा गुण नहीं था, जिसका समावेश उनमें न हो------------- देखने मे स्वस्थ और सुंदर, वाणी में मधुर, बुध्दि में प्रखर बंधुत्व

में अंतरंग सेवाभाव एवं हृदय उदारता से युक्त, स्वभाव से विनीत और गुणग्राही।"[१]

रजनीजी में कुछ ऐसे गुण थे, जो उसे अपनी दादी एवं माँ से विरासत के रूप में मिले थे। लेकिन उन्होंने उन गुणों को अधिक परिमार्जित किया। वे आकाशवाणी में काम करती थी। वहाँ अनेक प्रकार के, और स्तर के लोग आया-जाया करते थे। रजनीजीने उस दायरे में बहुत कुछ सीखा और पाया। उसके व्यक्तित्व में अदम्य साहस और निर्भीकता आ गयी। उसी के बूतेपर आगे वह अपने विचार निर्भीकता से समाज के सम्मुख व्यक्त कर सकीं। अपने कृतित्व में लेखिकाने जो देखा, अनुभव किया बेपर्दे कह देने का अनुठा साहस किया है।

लेखिका ने जो कुछ भी लिखा है, वह उनका अनुभूति सत्य कथन है। उनका संपूर्ण व्यक्तित्व भारतीय नारी की शोचनीय सामाजिक दशा के प्रति विद्रोह की भावना प्रदर्शित करता है। वह स्वयं सरकारी सेवा में थी। अत: एक नौकरी पेशा नारी की विविध समस्याओं से अवगत थी। नौकरी पेशा नारी की स्थीति चक्की के दो पाटों में पिसते अनाज की तरह है। उसे पुरुषप्रधान संस्कृति में एक साथ घर और बाहर की जिम्मेदारी उठानी पडती है। इस समस्या का समाधान करते हुये लेखिकाने लिखा है --

"जब पति-पत्नी दोनों कामपर जाते हैं, तब ऐसा क्यों होता है कि एक प्याला चाय बनाने की जिम्मेदारी पत्नीपर ही थोपी जाती है। पत्नी काम से आयी है, पति अगर उस दिन घरपर है, तो एक प्याला चाय बनाकर पत्नी को क्यों नहीं दे सकता ? ये बाते छोटी-छोटी और बेमानी लगती है, लेकिन उनका महत्व है, उनका प्रभाव दैनिक जीवनपर पडता है। नौकरी पेशा लडकियाँ पतियों के सहयोग से वंचित रह जाती है, क्योंकि उनमें साहस की कमी होती है, वे अपने-अपने अधिकारों के प्रति सजग नही होती। उनसे कहना चाहूँगी, संस्कारों को तोड दो, साहस से काम लो, अपने अधिकारों का प्रयोग करना सीखो, सदियों की नींद से अब तो जागो।"[२]

१] कुन्था जैन : लेखिका -रजनी स्मृति अंक :१९७५ : पृ. :२९

२] शुभा वर्मा : लेखिका -रजनी स्मृति अंक : पृ. :२२.

रजनीजी ने सदियों से अन्याय के नीचे दबी नारी को जागृत करने का प्रयत्न किया। पुरानी घीसी-पीटी रुढ़ियोंपर उन्होंने जबरदस्त आघात किया। सदियों से बंधनों में जकड़ी नारी को मुक्त करने को अल्पसा प्रयत्न किया। सच-मुच उन्होंने नारी को अपने अधिकारों के प्रति सतर्क करने का प्रयत्न किया।

एक ओर रजनीजी का व्यक्तित्व जबरदस्त विद्रोही था। अन्याय को सहना उनके खून में नहीं था। लेकिन उसी के साथ उनके सुचारु व्यक्तित्व में ममता, करुणा, कोमलता विद्यमान थी। पति का प्रेम और पुत्र का स्नेह पाकर उनका नारीत्व, स्त्रीत्व, की चरम पराकाष्ठातक पहुँच गया था। वह एक भरी-पूरी संपन्न नारी होने के कारण अपने सामाजिक व्यवहार में बडी विनम्र और मधुर थी। उनके हृदय की विनम्रता, शालीनता और मधुरता की स्पष्ट छाप उनके साहित्यपर दिखाई देती है। रजनीजी जिन पात्रों को जन्म देती हैं, उन पात्रों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करके उनके व्यक्तित्व की परत पर परत खोल देने में अनुठी सफलता प्राप्त करती है।

समन्वय और सामंजस्य उनके व्यक्तित्व के दोन महत्वपूर्ण पहलू थे। वे आधुनिक होते हुए भी, भारतीयता के आदर्शों की पुजारन थी। उनका परंपरा के प्रति विद्रोह किन्तु आस्थावादी दृष्टिकोण भी उनकी समन्वयवादी चेतना को प्रदर्शित करता है। अन्याय से समझौता करना उन्होंने नही सीखा, पर प्रतिकारसदा उनका जोर रहित होता था। उन्होंने नारी को अपने अधिकारों के प्रति सतर्क किया, परन्तु उसे अपने दायित्व से मुक्त नहीं किया। नारी के पैरों के बंधनो की बेडियाँ उन्होंने काट दी। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं की उन्होंने नारी के विशृंखलता की वकालत की। रजनीजी ने हमेशा नारी को आदर्श, पूज्य, वंदनीय रुप में ही देखा।

इस तरह श्रीमती रजनी पनिकर का व्यक्तित्व महान और भव्य था। वह एक आदर्श कथाकार के रुप में हमारे सामने आती है। यहीं महानता, यहीं आदर्श उनके साहित्य में बिखरा हुआ दिखाई देता है।

कृतित्व :-

लेखन कार्य :-

रजनीजी ने लिखना तो कालेज के दिनों से ही प्रारम्भ कर दिया था। बी.ए. के द्वितीय वर्ष में ही उनका नाम इलाहाबाद से निकलनेवाली मासिक पत्रिका के सम्पादकीय मंडलमें प्रकाशित हुआ था । विद्यार्थी जीवन में भी वह कालेज पत्रिका की सम्पादक रही। एम्.ए. करते ही सन् १९४६ में उन्होंने आचार्य कृपलानी की जीवनी पर आधारित एक छोटी सी पुस्तिका लिखी थी। तबसे वह मृत्यु के अंतिम क्षण तक लिखती रहीं। रजनी के पुस्तकों की प्रकाशन तीथि निम्नलिखित है —

	कृतियाँ	तीथि
जीवनी		
१]	आचार्य जे. बी. कृपलानी	१९४७
उपन्यास		
१]	ठोकर	१९४९
२]	पानी की दीवार	१९५४
३]	मोम के मोती	१९५५
४]	प्यासे बादल	१९५६
५]	काली लडकी	१९५७
६]	जाडे की धूप	१९५८
७]	एक लडकी दो रूप	१९६१
८]	तीन दिन की बात	१९६३
९]	महानगर की मीता	१९६९
१०]	सोनाली दी	१९६९

११]	बदलते रंग	१९७०
१२]	दो लडकियाँ	१९७३
१३]	दूरियाँ	१९७४
१४]	अपने-अपने दायरें	१९७५ [मृत्यू के उपरांत प्रकाशित]

कहानी संग्रह -

१]	सिगरेट के टुकडें	१९५६
२]	प्रेम चुनरियाँ बहुरंगी	१९६५
३]	चार्ल्स डिकेन्स के "टेल ऑफ दू सिटीज" का अनुवाद	१९६४
४]	भारतीय नारी प्रगति के पथपर	१९७०

उनके सभी पत्र-पत्रिकाओं मे १३० के ऊपर कहानियाँ प्रकाशित हुई है। उन में से कुछ निम्नलिखित कहानियाँ इस प्रकार है — "कायर"[१९५७], "आज दिवाली है"[१९५६], "आशा दीप"[१९५३], "जीरो और जीरो"[१९६३], "अपनी-अपनी दुनिया"[१९६४], "नारी नहीं नारी का विज्ञापन"[१९६४], "प्रेम चुनरियाँ बहुरंगी"[१९६२] आदि।

रजनीजी के महिला उपयोगी लेख पचास के उपर प्रकाशित हैं। जैसे — "युवा पीढी समस्या और समाधान", "नारी-घर-नौकरी, समस्या का दूसरा रूप", "दाम्पत्य जीवन", "विवाह लडकी के लिए एक समस्या" आदि हैं। कुछ साहित्यिक लेख भी हैं — "ताराशंकर बन्धोपाध्याय", "रवीन्द्र साहित्य में नारी चित्रण", "निराला के साहित्य में नारी"और "भाई क्षेमचन्द्र सुमन"।

उन्होंने कुछ नाटक, वार्ता और संस्मरण भी लिखे हैं, जो कम प्रकाशित और अधिक प्रसारित है।

स्वातंत्र्योत्तर महिला कथाकारों में रजनीजी का नाम अग्रगन्य है। उनके बारे में क्षेमचंद्र सुमन लिखते है — "मैं रजनी का अध्यापक रह चुका हूँ,

पहले वह कविता लिखती थी , अब उपन्यास का विमोचन हो रहा है। यह अच्छा ही हुआ जो वह पद्य से गद्य की ओर उन्मुख हुई। गद्य लेखिकाओं में रजनी का विशिष्ट स्थान है। महादेवी वर्मा, सुमित्राकुमारी सिन्हा, तेजरानी पाठक के बाद रजनी का नाम ही आता है।"[१]

इस तरह रजनीजी के साहित्य की धुरा विस्तृत है। उनके साहित्य में नारी जीवन की ओर अधिक तड़प दिखाई देती है। उन्होंने अपना कलम नारी की भोगी हुई यातनाओंपर सफलतासे उठाया है। इस तरह रजनीजी का जैसा व्यक्तित्व है, वैसाही प्रभावशाली कृतित्व भी है।

निष्कर्ष :-

सच-मुच रजनीजी का व्यक्तित्व अनेक विरोधी तत्वों का सम्मिश्रण होकर भी उसमें एक सामंजस्य का मार्ग प्रशस्त करता है । उनका विद्याविभूषित व्यक्तित्व है। उनकी विद्रोही और आस्थावादी दृष्टि, नारी सुलभता, कोमलता, ममता, करुणा की भावना, सूक्ष्म सौंदर्य बोध और सच्ची अनुभूति, अन्तर्मुखी वृत्ति, लोकमंगल की भावना और मानवतावाद उनके व्यक्तित्व के रंग प्रकट कर देते हैं। जाने-अनजाने उनके व्यक्तित्व के ये सुनहरे रंग उनके कृतित्व में पनपते हैं।

xxxxxx

१] क्षेमचंद्र सुमन : अंगजा : अप्रैल - १९७० : पृ. : ४५.